प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख
का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- २१० भोपाल, २८ फरवरी, डाक १ मार्च २०२६ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

कुछ खुद भी तो स्वाध्याय किया करें। लेखन में नकल-वृत्ति कारगर नहीं।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-२२

कैलाश आदमी

अग्र लेख (त्वरित विचार श्रृंखला) के अंतर्गत पिछले वर्ष मैं ३६५ आलेखों की पूर्ति की। इन्हें पाठकों की भावनाओं के अनुरूप पुस्तकाकार दिया जा रहा है तो दूसरी ओर नव वर्ष २०२६ में नए सिरे से यह विचार श्रृंखला आरंभ कर दी गई है जिसकी विशेषता यह है कि इस बार मैंने इसे केवल मानवीय गुणों पर केंद्रित किया है। तदंतर शुरुआती ११ आलेख गांधी प्रणीत एकादश व्रतों यथा सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह, शरीर श्रम, अस्वाद, स्वदेशी, स्पर्श भावना, सर्वधर्म समानत्व और निर्भयता पर केन्द्रित रहे।

इसके उपरांत मैंने अंत्योदय, संस्कार, सर्वोदय, विश्व शांति, देशानुराग़, अतिथि सत्कार, आशा विश्वास, अक्रोध, अनिद्रा और योग से निरोग जैसे विषयों पर कलम चलाई। आज मैंने स्वाध्याय विषय चुना है जिसका महत्व न केवल छात्र-छात्राएं बल्कि सभी युवक युवतियां और प्रौढ़ जन भी खूब समझते हैं।

अच्छे और गरिमामय लेखन के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति स्वाध्यायी हो। स्वाध्याय के कई प्रकार हैं जिनमें गृह बाचनालय या पुस्तकालय के अलावा पंचायत और पालिका एवं विद्यालय और महाविद्यालईन पुस्तकालयों वॉचनालयों को गिनाया जा सकता है जहां बैठ कर समाचार पत्र पत्रिकाओं और किताबों को पढ़ा जाता रहा है।

कृत्रिम बुद्धि के वर्तमान दौर में पत्र पत्रिकाओं और किताबों का चलन धीरे-धीरे काम होता गया है तथा लोग अब टीवी और हस्त चलित (मोबाइल) फोन पर ज्यादा ध्यान देने लगे हैं। वैसे अब लोग पहले की तरह गंभीरता से स्वाध्याय नहीं करते बल्कि कुछ पन्ने या पैराग्राफ अथवा शीर्षक पढ़ कर अध्ययन की औपचारिकता पूरी कर लेते हैं।

पहले लेखन कार्य को सर्वाधिक महत्व दिया जाता था जिसके फलस्वरूप नई नई पुस्तकें और पत्र पत्रिकायें पढ़ने मिल जाती थी। मैं अपने बैठक कक्ष की बड़ी टेबल पर अद्यतन पत्र पत्रिकायें संजोये रखता था। कभी-कभी स्वयं कोई उपन्यास या कहानी संग्रह पढ़ने बैठ जाता था तो उसे पूरा पढ़ कर ही दम लेता था।

मेरे पिता संत माधवानंद भजन लिखते और फिर खुद ही हारमोनियम लेकर गाने बैठ जाते थे। उन्हें गीता व रामायण जैसे ग्रन्थ कंठस्थ थे। उन्होंने गीता तत्व दर्शन पुस्तक की भी रचना की जिसमें उन्होंने प्रत्येक श्लोक का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया। इसके संपादन का दायित्व उन्होंने मुझे सौंप दिया और मैंने यह कर्तव्य भी पूरी निष्ठा से निभाया था।

वैसे श्रेष्ठ लेखन से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है आदर्श जीवन जीना मेरे पिता ने ऐसा ही आदर्श जीवन जिया और उनसे प्रेरणा पाकर मेरी मां श्रीमति दाखाबाई, मेरे पुत्र प्रिंस अभिशेख अज्ञानी, पुत्रियों विजय और आस्था एवं पत्नी स्नेह ने भी उसी मार्ग का अनुसरण किया। यदि कोई व्यक्ति आदर्श जीवन जी रहा है तो उसके पीछे उसके पारिवारिक संस्कार एवं स्वाध्यायी वृत्ति अवश्य रही होगी।

यदि आपकी रुचि लेखन में है और आप श्रेष्ठ लेखको में अपनी गणना कराना चाहते हैं तो आवश्यक है कि आप स्वाध्यायी हों। आपकी मातृ भाषा जो भी हो आपको सर्व प्रथम उसी भाषा में ही अपने विचारों को अभिव्यक्त करना चाहिए। यदि आप हिंदी भाषी हैं तो आप अंग्रेजी के अलावा किसी अन्य राज्य की भाषा सीख कर उसमें भी अपना लेखन कार्य कर सकते हैं। इस हेतु आपको किसी वरिष्ठ लेखक या साहित्यकार को अपना गुरु अवश्य बनाना चाहिए ताकि आपके लेखन में कोई कमी ना रह पाए।

वर्तमान समय में प्रचलित समाज माध्यमों से जुड़ना भी आवश्यक हो गया है। आप जब ऐसे किसी माध्यम से जुड़ें तो सर्वप्रथम आप चेहरा पत्रिका (फेसबुक), इंस्टाग्राम, युट्यूब, व्हाट्सएप आदि पर उभरने वाली प्रतिभाओं को अवश्य निहारें और उनके उदगारों को आत्मसात करने का प्रयास करें। बाद में आप अपना वॉट्सएप समूह भी बना सकते हैं। आपकी स्वाध्याई वृत्ति इसमें निस्संदेह सहायक होगी।

यूं तो भारत कभी अध्यात्म और संस्कृति के क्षेत्र में विश्व गुरू रहा है और हम आज भी गांधी, विनोबा, विवेकानंद, ओशो, महेश योगी जैसी विभूतियों से प्रेरणा लेते हैं। आपकों लेखन के क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करना है तो देश की ऐसी विभूतियों और अन्य देशों के महापुरूषों के जीवन से प्रेरणा ले सकते हैं तथा उनके द्वारा लिखी गई कृतियों का स्वाध्याय कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर स्वयं अपने लेखन को गरिमा प्रदान कर सकते हैं।

जब देखें कि अपने लेखन पर समाज गौर करने लगा है तब आप पाठकों से भी संवाद कर सकते हैं। कोई - काई पाठक आपके लेखन में कमियां गिना सकते हैं लेकिन आप उन्हें अनदेखा न करें बल्कि कोई सुझाव अच्छा लगे तो तदनुरूप अपने लेखन में सुधार लाने का प्रयत्न करने में संकोच न करें।

भारत शिक्षा के क्षेत्र में पीचे नहीं हैं। यह बात अलग है कि शिक्षा का स्तर दयनीय हैं। खासकर सरकारी विद्यालय-महाविद्यालय नेतृत्व की उपेक्षा के कारण ऐसी स्थिति निर्मित हुई हैं। चिंता की बात यह है कि स्वाध्यायी वृति कम हुई है तथा लेखकों और पत्रकारों को सरकार के गुणगान हेतु वाध्य किया जा रहा है। कृत्रिम वुद्धि (एआई) ने व्यक्ति के सीखने की मूलवृत्ति व प्रवृत्ति का क्षरण किया है। जैनजी कहीं जाने वाली नई पीढ़ी को कृत्रिम वुद्धि (एआई) ने आलसी बना दिया है। अतः स्वाध्याय और आत्मचिंतन विद्या को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। छात्र व युवा किसी धार्मिक, साम्प्रदायिक और दलगत संगठन से जुड़ने की बजाय स्वतंत्र संस्था से जुड़कर अपनी सामाजिक व राष्ट्रीय गतिविधियों में हिस्सा लेकर अपनी रूचियों को परिस्कृत कर सकते है।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां -

कुछ खुद भी तो स्वाध्याय किया करें।
लेखन में नकल-वृत्ति कारगर नहीं।।

'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' उर्फ 'एआई' मुकाबले में इंसानी अक्ल?

राज कुमार सिन्हा

कम्प्यूटर, इंटरनेट के बाद अब हमारे संसार में 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' यानि 'एआई' का अवतार हुआ है। कहा जा रहा है कि इंसानी वजूद की तमाम- ओ-तमाम हरकतें 'एआई' की मार्फत आसानी से हल कर ली जाएंगी। यहां तक कि सोचने-विचारने की अनूठी इंसानी फितरतें भी 'एआई' के जरिए होने लगेंगी। हाल में दिल्ली में हुआ 'एआई इम्पैक्ट समिट 2026' इसी नवाचार के व्यापार को जमाने की कोशिश था। क्या हुआ था, उस 'समिट' में? बता रहे हैं, राज कुमार सिन्हा।-संपादक

पिछले दिनों दिल्ली में आयोजित 'एआई इम्पैक्ट समिट 2026' का समापन 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के क्षेत्र में वैश्विक सहयोग के लिए उसके प्रभाव पर ऐतिहासिक 'नई दिल्ली घोषणापत्र' को स्वीकार किए जाने के साथ समाप्त हुआ। करीब 91 देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने इस घोषणापत्र से सहमति जाहिर की। घोषणापत्र जोर देता है कि 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' में निहित सिद्धान्त की तर्ज पर 'एआई' के लाभों को मानवता के बीच समान रूप से साझा किया जाना चाहिए। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' से प्रेरित यह घोषणा 'एआई' संसाधनों तक न्यायसंगत पहुंच पर बल देती है, ताकि सभी देश सार्वजनिक लाभ के लिये उसे विकसित कर सकें। इस शिखर सम्मेलन से दीर्घकालिक अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों को बढ़ावा मिलने और 'एआई' को आर्थिक विकास के एक प्रमुख चालक के रूप में स्थापित करने की उम्मीद है। आयोजकों का कहना है कि शिखर सम्मेलन से दीर्घकालिक साझेदारियों को मजबूती मिलने और देशों को साझा सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप में बदलने के लिए प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों दोनों की भागीदारी के साथ, 'नई दिल्ली घोषणा' 'एआई' विकास पर आम सहमति बनाने और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक वैश्विक प्रयास का प्रतीक है।

तेजी से बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों में दुनिया भर में अभी सबसे ज्यादा जोर आधुनिक तकनीकों के विकास और नवाचार के प्रयोग पर दिया जा रहा है। सभी देश अपनी विकास नीतियों में अद्यतन तकनीकों को अपना रहे हैं और पारंपरिक तरीके से होने वाले बहुत सारे कामों का स्वरूप बदल रहा है। खासतौर पर 'एआई' के फैलते दायरे ने वैश्विक स्तर पर कामकाज के तौर-तरीकों और उसमें इंसानी भूमिका पर व्यापक असर डाला है। जानकारों का कहना है कि 'एआई' आज केवल तकनीक का विषय नहीं रह गई है, बल्कि यह समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति और मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित करने वाली शक्ति बन चुकी है। स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, उद्योग, संचार, सुरक्षा और शासन-हर क्षेत्र में 'एआई' के उपयोग ने नई संभावनाएं खोली हैं, वहीं कई गहरी और जटिल चुनौतियां भी हमारे सामने खड़ी कर दी हैं।

'एआई' को अक्सर चौथी औद्योगिक क्रांति का केंद्र माना जाता है। मशीन लर्निंग, डेटा एनालिटिक्स और स्वचालन ने उत्पादन की गति बढ़ाई है और निर्णय प्रक्रिया को तेज किया है। अस्पतालों में रोगों की पहचान, किसानों के लिए मौसम और फसल की सलाह तथा प्रशासन में सेवाओं का डिजिटलीकरण 'एआई' की सकारात्मक उपलब्धियां हैं, लेकिन यह तकनीकी बदलाव केवल औजारों का नहीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं का भी पुनर्गठन कर रहा है। 'एआई' आधारित स्वचालन से कई पारंपरिक नौकरियां समाप्त होने की आशंका है। खासकर निम्न और मध्यम कौशल वाले काम सबसे अधिक प्रभावित हो सकते हैं। दूसरी ओर, उच्च तकनीकी कौशल वाली नौकरियों की मांग बढ़ रही है। इससे सामाजिक असमानता गहराने का खतरा है। यदि पुनः कौशल (रिस्किलिंग) और शिक्षा पर गंभीर निवेश नहीं हुआ, तो तकनीक लाभ के बजाय विभाजन का कारण बन सकती है।

'एआई' का आधार 'डेटा' है और यही सबसे बड़ा जोखिम भी है। नागरिकों के व्यक्तिगत 'डेटा' का अंधाधुंध संग्रह, उसका व्यावसायिक उपयोग और राज्य द्वारा निगरानी, निजता के अधिकार को कमजोर कर रहे हैं। 'फेस रिकग्नीशन' जैसी तकनीकें सुरक्षा के नाम पर लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओं के लिए खतरा बन सकती हैं। सवाल यह है कि तकनीक का नियंत्रण किसके हाथ में होगा-जनता के या सत्ता और कॉरपोरेट के? 'एआई' 'तटस्थ' नहीं होता, वह उसी 'डेटा' और सोच को दोहराता है जिस पर उसे प्रशिक्षित किया गया है। यदि 'डेटा' में जाति, लिंग, वर्ग या नस्ल का पक्षपात है, तो 'एआई' के फैसले भी भेदभावपूर्ण होंगे। न्याय व्यवस्था, भर्ती प्रक्रियाओं और ऋण वितरण जैसे क्षेत्रों में इसका असर गंभीर हो सकता है। इसलिए 'एआई' की नैतिकता और जवाबदेही अत्यंत महत्वपूर्ण है।

'एआई' तकनीक पर फिलहाल कुछ गिने-चुने देशों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का वर्चस्व है। इससे एक नया डिजिटल उपनिवेशवाद उभरने का खतरा है, जहां विकासशील देश केवल उपभोक्ता बनकर रह जाएंगे। भारत जैसे देशों के लिए यह जरूरी है कि वे 'एआई' को केवल बाजार नहीं, बल्कि सार्वजनिक हित के औजार के रूप में विकसित करें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को न तो अंधी प्रशंसा की जरूरत है और न ही भयभीत होकर खारिज करने की। आवश्यकता है, लोकतांत्रिक नियंत्रण, मजबूत कानूनी ढांचा, नैतिक मानक और जनहित केंद्रित नीति की। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक न्याय के लिए 'एआई' का उपयोग तभी सार्थक होगा, जब मानव गरिमा, समानता और अधिकारों को प्राथमिकता दी जाए। अंततः सवाल तकनीक का नहीं, हमारे सामाजिक दृष्टिकोण का है। 'एआई' भविष्य तय करेगा या भविष्य में 'एआई' को कैसे इस्तेमाल किया जाए, यह फैसला हमें ही करना होगा। भारत में 'एआई' की संभावनाओं का उपयोग करने के लिये सुदृढ़ कौशल-विकास, पुनः कौशल विकास तथा 'एआई' साक्षरता संबंधी पहल आवश्यक हैं। प्रतिस्पर्द्धी 'एआई' विकास के लिये आवश्यक उन्नत कंप्यूटिंग अवसंरचना, सेमीकंडक्टर विनिर्माण और हाइपरस्केल 'डेटा' केंद्रों की भारत में कमी है। इधर, बड़ी कंपनियां खर्च घटाने के लिए 'एआई' टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रही हैं और नौकरियां कम कर रही हैं। इसी बीच, 'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' (आईएमएफ) की चीफ क्रिस्टलीना जॉर्जीवा ने नौकरियों पर 'एआई' के बढ़ते खतरे को लेकर एक बड़ी चेतावनी दी है। उन्होंने कहा है कि दुनियाभर में करीब 40 प्रतिशत एंट्री-लेवल नौकरियों पर 'एआई' का खतरा मंडरा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि यह आंकड़ा बढ़कर 60 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। हालांकि भारत के लिए यह 26 फीसदी हो सकता है। 'एआई' भविष्य में मानव सभ्यता के लिए खतरा बनने की संभावना एक वैश्विक बहस का विषय है। कई विशेषज्ञ, शोधकर्ता और तकनीकी दिग्गज इस बात पर चिंता व्यक्त कर चुके हैं कि अनियंत्रित 'एआई' विकास मानवता के लिए अस्तित्व का संकट पैदा कर सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि 'एआई' का विकास और उसे लागू करने की गति, उसके सुरक्षा मानकों से तेज रही, तो यह मानवता के लिए अस्तित्व के लिए खतरा बन सकता है। लेखक और पत्रकार प्रियदर्शन कहते हैं कि इंटरनेट ने हमारी स्मृति छीनी थी, 'एआई' कल्पनाशीलता न छीन ले। इस चुनौती को ध्यान में रखते हुए भविष्य की योजना बनाई जाने की आवश्यकता है। (सप्रेस)

अजय रेवनाथ चौरे के मार्गदर्शन में घोघरा में १५ दिनी संतरा महोत्सव संपन्न

निर्दलीय के लिए हंसराज बारस्कर

घोघरा(सौंसर)। पूर्व विधायक एवं सौसर विधानसभा के जननायक के रूप में मशहूर अजय रेवनाथ चौरे के मार्गदर्शन में आयोजित 15 दिवसीय संतरा महोत्सव का समापन यहां हर्षोल्लास के साथ गरिमामय वातावरण में हुआ।

इस महोत्सव में प्रदेशभर से बड़ी संख्या में किसानों की सहभागिता रही। श्री चौरे ने दैनिक निर्दलाय को बताया कि इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य किसानों को उन्नत खेती, आधुनिक कृषि तकनीक, विपणन व्यवस्था तथा अपनी उपज को सीधे बाजार तक पहुँचाकर बिचौलियों से मुक्त होकर उचित मूल्य प्राप्त करने के प्रति जागरूक करना था। उपरोक्त अवसर पर किसानों को मार्गदर्शन दिया गया कि वे तकनीकी ज्ञान अपनाकर खेती को लाभ का साधन बना सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि अजय चौरे के सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप जिला पांढुरना में संतरा फसल को एक जिला एक उत्पात के रूप में पहचान मिली, जिससे क्षेत्र के किसानों को नई आर्थिक दिशा प्राप्त हुई। साथ ही, किसानों के हित में 'मेरा गाँव - मेरा बाजार' नामक स्थायी हाट की स्थापना भी की गई, जिससे किसानों को अपने ही क्षेत्र में बाजार उपलब्ध हो सके और दूर-दराज़ की मंडियों में जाने का अतिरिक्त खर्च न उठाना पड़े।

संतरा महोत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में महोत्सव के समापन समारोह में भी किसानों, अतिथियों एवं ग्रामीणजनों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। समारोह में संतरा महोत्सव के आयोजक अजय चौरे इस अवसर पर मुख्य रूप से उपस्थित रहे। समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में नरेंद्र साहू पधारे। विशिष्ट अतिथियों में रामराव महाले, कृष्णकांत ढोबले, राव साहेब (राजना), भूषण केवटे एवं धीरज चौधरी शामिल रहे। किसान सम्मान समारोह में 12 एवं 24 संतरे की पैकिंग का विधिवत शुभारंभ किया गया एवं एसएफपीओ के उत्पादों का भी लोकार्पण संपन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान शाम 4 बजे किसान सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें स्वर्गीय रेवनाथ चौरे (पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश शासन) की स्मृति में कृषि रत्न पुरस्कार से राजकुमार कालबांडे एवं श्री पवार को सम्मानित किया गया। वहीं क्षेत्र के प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा किसानों के हित में उपयोगी विचार साझा किए गए।

कार्यक्रम के समापन पर शाम 6 बजे सामूहिक भोजन का आयोजन किया गया। समापन समारोह में श्री बलवंतराव फोले, श्री नरेंद्र फोले, श्री रविंद्र चौरे, श्री सोनेलाल बंड, श्री भुवनेश्वर बोबडे, श्री भीमराव ठाकरे, श्री योगीलाल करमारे, श्री मनोहर मोहोड़, श्री विलास राऊत, श्री केशवराव इंगोले एवं श्री शेषराव राऊत सहित किसानों, अतिथियों एवं ग्रामीणजनों की बड़ी संख्या में सहभागिता रही। शाम 7 बजे से आयोजित प्रदेश स्तरीय आदिवासी लोककला कार्यक्रम ने समापन समारोह को विशिष्ट सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश की समृद्ध आदिवासी परंपराओं का मनोहारी प्रदर्शन लोकनृत्य, लोकगीत, ढोल-मांदल एवं अन्य पारंपरिक वाद्ययंत्रों के माध्यम से किया गया। प्रस्तुतियों के माध्यम से आदिवासी जीवन-शैली, प्रकृति से गहरा जुड़ाव एवं सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रूप में प्रदर्शित किया गया। कलाकारों की रंग-बिरंगी पारंपरिक वेशभूषा, सशक्त नृत्य मुद्राएं एवं सामूहिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस लोककला कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य आदिवासी संस्कृति के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के साथ-साथ युवा पीढ़ी को अपनी लोक परंपराओं से जोड़ना रहा। कार्यक्रम के दौरान दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ कलाकारों का उत्साहवर्धन किया। देर रात तक चले इस सांस्कृतिक आयोजन ने संतरा महोत्सव के समापन को ऐतिहासिक, यादगार एवं भव्य स्वरूप प्रदान किया। उक्त सांस्कृतिक संध्या में मुख्य अतिथि के रूप में संजय राठी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विशेष रूप से सतीश बोडखे, नरेंद्र परमार, डॉ. गुलाबराव पांडे, डॉ. राऊत, मधुकर गायकवाड, राहुल रंगारे, राजू वाडीवा, अनवर खान, संजय इंगोले एवं यदोराव ढोबले सहित अनेक गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही। इसके अतिरिक्त रमेश माधव लाल दुबे, खुशाल चौधरी, दीपक कामड़े, संदीप रघुवंशी, आशीष ठाकरे, संजय पराडकर, चंद्रशेखर अंबेडकर, बंडू बेंडे, अशोक ठाकरे, डॉ. रमेश हाते, कैलाश ठाकरे, दिनेश लाड़से, गजानन कोचे, रोशन गावंडे, निलेश वानखेडे, साजिद कुरैशी, पवन कामड़े, अनुभव रूंधे, गणेश फोले, रितेश लांडे, ऋतिक फोले, सागर पाबले, कैलाश इंगोले, तुषार वीरखरे, यश राऊत, पवन रोहनकर, प्रणय ठाकरे, प्रफुल्ल बेंडे, वैभव मोहोड, अमित चौधरी, साहिल बंड, अलकेश बागडे, दीपक सालबर्डे एवं पंकज गयधनी की उपस्थिति में समापन समारोह संपन्न हुआ। प्रदेश स्तरीय आदिवासी लोककला की मनमोहक प्रस्तुतियों ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया ।